विचार बिन्दु

स्वयं प्रकाशित दीप को भी प्रकाश के लिए तेल और बत्ती का जतन करना पड़ता है, बुद्धिमान भी अपने विकास के लिए निरंतर यत्न करते हैं। कोई भी व्यक्ति अयोग्य नहीं होता, केवल उसको उपयुक्त काम में लगाने वाला ही कठिनाई से मिलता है। -शुक्रनीति

किसी भी कक्षा/विषय में अध्ययन के लिए एडमिशन परीक्षा पर बैन अति आवश्यक, कोचिंग स्वत: ध्वस्त

शिक्षा के सम्बन्ध में पिछले एक सम्पादकीय लेख में मैनें कुछ अति महत्वपूर्ण सुझाव दिए थे जिनमे एक सुझाव यह भी था कि स्कूली शिक्षा उपरांत स्नातक अथवा अधिस्नातक और डॉक्टर ऑफ़ फिलोसोफी डिग्रीओं के लिए कोई परीक्षा आयोजित नहीं की जाय। अपितु पात्रता क्लास परीक्षा के रिजल्ट के आधार पर ही उसे आगे मन वांछित क्लास और विषय में प्रवेश दिया जाय। इसके लिए एक तो सभी उच्च कक्षाओं में सीमित के वजाय अधिक सीटों की उपलब्धता सुनिश्चित हो। दूसरी तरफ एक कंसोलिडेटड प्रवेश सूची बनाकर छात्र को वांछित कक्षा में और वांछित कॉलेज आवंटित कर दिया जाय। इस प्रकार सभी पात्र छात्रों को प्रवेश सुनिश्चित हो सकेगा। कक्षा की वार्षिक अथवा दो सेमेस्टर परीक्षाओं में अनुतीर्ण होने पर अगली साल छात्र एक्स स्टूडेंट के रूप में पुन: परीक्षा देने में योग्य माना जायेगा। उसमे भी अनुतीर्ण होने पर उसे फिर कोई और विकल्प अपनाना पड़ेगा जो उसे सुगम लगे। इस प्रकार सभी को एडमिशन देकर सरकार देश के एक नागरिक के साथ उचित व्यवहार करती प्रतीत होगी। यह नहीं कि छात्र किसी दूसरे देश में जाकर वहां वांछित शिक्षा प्राप्त करें। स्वतंत्र देश का नागरिक होने का गर्व तो तभी होगा जब देश की सरकार छात्र को शिक्षा के समुचित अवसर प्रदान करने में समर्थ हो।

रूस - यूक्रेन युद्ध के समय जब सैकड़ों की संख्या में भारतीय छात्र उन देशों और आसपास से सरकारी प्रयासों से निकाल कर भारत वापिस लाये गये तो मुझे तो कम से कम एक लज्जा का भाव मन में जाग्रत हुआ कि 70 साल का आज़ाद देश अपने युवाओं को वांछित शिक्षा देने में अभी तक समर्थ नहीं हो सका। मुझे प्रसन्नता होती उस समय यदि सभी मीडिया देश की सरकारों पर थूकते और प्रजा को अवगत कराते कि जो सरकार वे चुन रहे हैं वह कितनी असमर्थ और निरीह है? लेकिन कहीं से कोई आवाज नहीं उठी, प्रत्युत छात्रों को सकुशल देश वापिस लाने की प्रशंसा में ही केवल संलग्न रह गए। सरकार के कमजोर पक्ष की तरफ उनोहने सोचा तक नहीं। क्या यह मानसिक दिवालियापन दर्शाता है अथवा कमजोर पॉलिटी? पाठक इस पर निर्णय करें।

आशा करते हैं कि सरकार शीघ्र ही सभी लेवल की प्रवेश परीक्षाएं कानून बना कर उन्मूलन करेगी जिससे तरुण मन छात्र मानसिक तौर पर प्रताणित न हों और एक आज़ाद देश के आज़ाद नागरिक की भांति अपनी मन माफिक शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम हों। कोचिंग का मकड़ जाल इस प्रक्रिया से स्वतः ध्वस्त हो जायेगा वे संस्थाए और उनके अध्यापक आदि कोई और विकल्प तलासते नज़र आएंगे।

आगे पढ़ने के लिए यदि प्रवेश परीक्षा उन्मूलन हो जाता है तो कोचिंग का बृहत धंधा स्वत: ही सिमटते सिमटते बंद हो जायेगा। इसके परिणाम स्वरुप स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में जो ह्रास हो चुका है उसका गौरव और गुणवत्ता शनै: शनै: वापिस पुन: स्थापित हो सकेगी, और जो उदासीनता स्कूली शिक्षक वर्ग में व्याप्त हो चुकी है वह भी धीरे-धीरे अधिक जागरूक और कार्य के प्रति संवेदनशील व् जवाब देह बन जाएगी।

उपरोक्त को सही मार्ग पर चलाने के लिए संरचना सरकार और अनुवभी शिक्षकों को बनानी भी पड़ेगी और उस की क्रियान्वति पर पेनी नज़र जनता जनप्रतिनिधिओं को भी रखनी होगी ताकि कही पर शिथिलता आने पर उसे शीघ्र इंगित कर अनुकूल किया जा सके। इस पक्ष पर मेरा सुझाव हैकि शिक्षकों के पदों को खाली न रहने दिया जाय, इसकी जबाव देहि शिक्षा सचिव और सम्बंधित क्षेत्रों के जन प्रतिनिधिओं की निर्धारित हो। शार्ट टर्म विज्ञापनों से वांछित चयन और नियुक्ति शीघ्र हो सकती है। गेस्ट फैकल्टी अथवा टेम्परारी अध्यापक किसी भी हालत में नियुक्त न किये जायं। विषय का टीचर नहीं होने पर डिस्ट्रिक्ट अदालते स्वत: संज्ञान से प्रिंसिपल अथवा सचिव को न्यायलय में घसीट सकती हैं। स्कूलों में पर्याप्त प्रयोगशालाएं वांछित उपकरणों से सुसज्जित हों।

विज्ञानं और भूगोल जैसे विषयों को पढ़ाने के लिए टीचर को अनुभव ग्रहण बनाना आवश्यक है। विख्यात शिक्षा विद डॉ महाजनी ने एक शिक्षा की गुणवत्ता पर आयोजित एक प्रश्न उपस्थित सदस्यों से पूंछा कि यदि एक उत्तम टेक्स्ट बुक और एक अनुभवी टीचर में किस्से एक को चुनना हो तो किसे चुनेगे? अनुभवी टीचर का कोई विकल्प नहीं है।

उपरोक्त वर्णित मॉडल कोई नया नहीं है अपितु पूर्व में यही तरीका पूरे देश में अपनाया जाता था। इस देश में विद्युता की कोई कमी नहीं है। एक बार यदि हम किसी सिस्टम को परिवर्तित कर सरल और फुलप्रूफ बनाने में संलग्न हो जायँ तो वह सिस्टम फुलप्रूफ भले ही बन जाय लेकिन विस्तारित और किलिष्ट बन जाता है। उसमे फिर से नए आयाम तो जोड़े जा सकते हैं लेकिन उसे सरल नहीं किया जा सकता। ऐसी हमारी विद्वता और मानसिकता है। अत: पुरानी प्रणाली पर लौटना असंभव सा ही होता है।

मुख्य कारण हमारी मानसिकता में बैठी उस सिस्टम की कोई छवि ही हमें वांछित परिवर्तन करने से वाधित करती है। एक अन्य विकल्प प्रश्न पत्र के मॉडरेशन का है। हमें एक कॉमन पाठ्यक्रम बना कर उससे प्रश्न पत्र तैयार कर सभी अभ्यर्थिओं से ऑन लाइन उसे हल करा कर प्रवेश के वास्ते मेरिट सूची बनाई जा सकती है। कहने का तात्पर्य ये है कि कोई भी प्रणाली अपनाई जाय, छात्रों को सुगम लगे यह केवल प्रवेश के लिए विषयवार सूची बनाने में सहायक होगी। छात्र प्रवेश के लिए तो पात्रता परीक्षा के परिणाम से ही योग्य है केवल विषय निर्धारण में यह तरीका सहायक हो सकता है। प्रश्न पत्र आउट आदि लीक होने की भी समस्या स्वत: हल है।

आशा करते हैं कि सरकार शीघ्र ही सभी लेवल की प्रवेश परीक्षाएं कानून बना कर उन्मूलन करेगी जिससे तरुण मन छात्र मानसिक तौर पर प्रताणित न हों और एक आज़ाद देश के आज़ाद नागरिक की भांति अपनी मन माफिक शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम हों। कोचिंग का मकड़ जाल इस प्रक्रिया से स्वत: ध्वस्त हो जायेगा वे संस्थाए और उनके अध्यापक आदि कोई और विकल्प तलासते नज़र आएंगे। प्रदेश का शिक्षा विभाग भी कहीं अधिक उत्तरदाई और त्वरित गति से कार्य करेगा।

-प्रो. (डॉ.) वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं अधिष्ठाता महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर राजस्थान

आदि काल से लाइफ मैनेजमेंट के सर्वश्रेष्ट गुरु भोले नाथ से जुड़े रोचक रहस्य

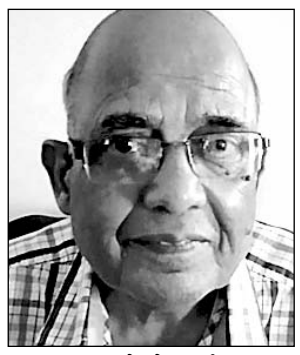

डा. जे. के. गर्ग

हम सभी आत्म चिंतन करें जब शिवजी के परिवार में विरोधी स्वभाव के प्राणी भी प्रेमपूर्वक साथ साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो क्यों नहीं हम हमारे समाज एवं देश में बिना किसी भेदभाव के गिरे हुओं को, पिछड़े हुओं को, विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को साथ लेकर चल सकते हैं? यह भी सत्य कि कुछ धर्मांध स्वार्थी पथभ्रष्ट तथाकथित धार्मिक मनुष्य मौका मिलने पर अपने निज स्वार्थ के खातिर समाज में सांप्रदायिक सद्भाव को नष्ट करने के अंदर शामिल हो जाते है । शिव रात्री के पावन पर्व हम सभी सनातन धर्मी भारत वाशी संकल्प ले कि हम समाज के विभिन्न धर्मालंबी लोगों के साथ मिलजुल कर रहेंगे एक दुसरे का सम्मान करके प्रेम पूर्ण समंध बनायेगें । समाज के अंदर ऊँच नीच का भेदभाव मिटाने के लिये काम करेंगे । आदि काल के सर्व श्रेस्ष्ट मेनेजमेंट गुरु भोलेनाथ अपने परिवार के अंदर निवास करने वाले विपरीत स्वभाव वाले प्राणी बिच्छू, बैल और सिंह, मयूर एवं सर्प और चूहा जैसे घोर विरोधी स्वभाव के प्राणियों के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो हम विभिन्न धर्मों के अनुयायियों-हिदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, फ़ारसी, जैन, देश वासियों को साथ लेकर क्यों नहीं जीवन व्यापन कर सकते हैं? सही मायने में भगवान शिव की सच्ची पूजा आराधना तभी होगी जब हम उनकी शिक्षाओं को जीवन के अंदर धारण करके मिल जुल कर प्रेमपूर्वक एक परिवार की भार्ती रहेंगें। **ॐ नम: शिवाय, ॐ नम: शिवाय,ॐ नम: शिवाय।**

भोलेनाथ जितने रहस्यमयी हैं उतनी ही उनकी वेश-भूषा भी अनूठी ही है इसी के साथ भोले शंकर से जुड़े तथ्य भी उतने ही विचित्र और अनोखे हैं। भोलेनाथ शिव जी श्मेंमाशन में निवास करते हैं, भोलेनाथ गले में नाग धारण करते हैं, भांग व धतूरा ग्रहण करते हैं। सनातन धर्मी फाल्गुन के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी यानी 8 मार्च 2024 को शिवरात्रि धूमधाम से मनाएंगे।

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को ही शिवरात्रि क्यों मनाई जाती है? जनसाधारण के मन में सवाल उत्पन्न होता है कि क्यों फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है? धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक ऐसा माना जाता है कि सृष्टि की रचना इसी दिन हुई थी। मध्य रात्रि में भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था। ईशान संहिता के अनुसार फाल्गुन चतुर्दशी की अर्द्धरात्रि में भगवान शंकर लिंग के रूप में अवतरित हुए। चतुर्दशी तिथि के महानिशीथ काल में महेश्वर के निराकार ब्रह्म स्वरूप प्रतीक शिवलिंग का अविभार्व होने से भी यह तिथि महाशिवरात्रि के नाम से जानी जाती है। इसी दिन, भगवान विष्णु व ब्रह्मा के समक्ष सबसे पहले शिव का अत्यंत प्रकाशवान स्वरूप प्रकट हुआ था। कहा जाता है कि शिवरात्रि के दिन भगवान शिव और आदिशक्ति का विवाह हुआ था। मान्यताओं के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन ही समुद्र मंथन के दौरान कालकेतु विष निकला था। भगवान शिव ने संपूर्ण ब्रह्मांड की रक्षा के लिए स्वयं ही सारा विष पी लिया था। इससे उनका गला नीला पड़ गया और तभी से शिवजी को नीलकंठ के नाम से जाना जाता है। भोले नाथ को सांसारिक होते हुये भी श्मशान का निवासी बोला जाता है इसके पीछे भी लाइफ मैनेजमेंट का महत्वपूर्ण रहस्य छिपा है।

जानिये कैसे ? सच्चाई तो यही है कि संसार मोह-माया का प्रतीक है वहीं दुसरी तरफ श्मशान वैराग्य का प्रतीक है। प्रभु शिव कहते हैं कि आदमी को संसार में रहते हुए अपने कर्तव्य पूरे करने चाहिए वहीं साथ साथ मोह-माया से दूर भी रहना चाहिये। क्योंकि शरीर और संसार दोनों ही नाशवान है। एक न एक दिन यह सब कुछ नष्ट होने वाला है। इसलिए संसार में रहते हुए भी आदमी को किसी से मोह नहीं रखते हुए अपने कर्तव्य पूरे करने के साथ साथ एक बैरागी की तरह जीना चाहिये।

मन के अंदर सवाल उठता है कि शिवलिंग मंदिरों में बाहर क्यों होता है?

नि:संदेह भोले नाथ जन साधारण के देवता हैं, इसीलिए भोलेनाथ वहां रहते हैं जहाँ छोटे-बड़े, जवान-बुजुर्ग आसानी से पहुंच सके। इसी मान्यता के कारण शिवलिंग को मन्दिरों में बाहर ही स्थापित किया जाता है जिससे बच्चे, बूढ़े, जवान जो भी जाए शिवलिंग को छूकर, गले मिल कर या फिर भगवान् के पैरों में पड़कर अपना दुखड़ा सुना कर हल्के हो सकते हैं। इसी वजह से शिवजी अकेले ही वो देव हैं जो गर्भ गृह में भक्तों को दूर से ही दर्शन देते हैं। शिवजी को भोग लगाने और अर्पण करने के लिए कुछ भी नहीं हो तो भक्त उन्हें पत्ता, फूल, या अंजलि भर के भोले नाथ को खुश कर सकता और उनकी पूजा-अर्चना कर सकता है ।

आईये जाने भोलेनाथ शिवजी की पूजा-अर्चना में बेलपत्र और जल क्यों चढ़ाया जाता है ?

नि:संदेह बेलपत्र भगवान शिव को बेहद प्रिय है और इसलिए शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाए बिना शिव की पूजा को पूर्ण नहीं माना जाती है । बेलपत्र में तीन पत्तियां हैं जिसको लेकर कई तरह की धारणाएं विध्यमान हैं । बेलपत्र में तीन पत्तियां को त्रिदेव (सृजन, पालन और विनाश के देव ब्रह्मा, विष्णु और शिव) माना गया है तो कहीं सत्व, रज और तम गुण का परियाचक माना जाता है। ध्यान देने योग्य बात है कि कहीं बेलपत्र में तीन पतियों को तीन आदि ध्वनियां जिनकी सम्मिलित गूंज से ऊं बनता है का प्रतीक माना गया है। बेलपत्र की इन तीन पत्तियों को महादेव त्रिनेत्र और भोलेनाथ के हथियार त्रिशूल का भी प्रतीक माना जाता है। शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाने से एक पौराणिक कथा भी जुड़ी हुयी है । समुद्र मंथन के समय जब विष निकला तो भगवान महादेव ने पूरी सृष्टि को बचाने के लिए ही इस विष को पी कर अपने कंठ में धारण कर लिया जिसके के प्रभाव से उनका कंठ नीला हो गया और उनका पूरा शरीर अत्यधिक गर्म हो गया जिसकी वजह से आसपास का वातावरण भी जलने लग। जानने लायक बात है कि बेलपत्र विष के प्रभाव को कम करता है इसलिए सभी देवी-देवताओं ने बेलपत्र शिवजी को खिलाना शुरू कर दिया था । बेलपत्र के साथ साथ शिव को शीतल रखने के लिए उन पर जल भी अर्पित करने के पीछे रहस्य यह है कि बेलपत्र और जल के प्रभाव से भोलेनाथ के शरीर में उत्पन्न गर्मी शांत होने लगी और तभी से शिवजी पर जल और बेलपत्र चढ़ाने की प्रथा शुरू हो गई। शिवलिंग पर हमेशा तीन पत्तियों वाला ही अर्पित करना चाहिये एवं बेलपत्र चढ़ाते समय ॐ नम: शिवाय मंत्र का जाप करना जरूरी है ।

जानिये शिव को महादेव क्यों कहते हैं?

मनुष्य को बड़ा या महान बनने के लिए त्याग, तपस्या, धीरज, उदारता और सहनशीलता की आवश्यकता होती है। विष को अपने भीतर ही सहेज कर आश्रितों के लिए अमृत देने वाले होने से एवं विरोधों, विषमताओं के मध्य संतुलन रखते हुए अपने विशालकाय परिवार को एक बना रखने की शक्ति रखने वाले शिव ही महादेव हैं।

भांग-धतूरे को भगवान शिवजी पर क्यों चढ़ाया जाता है ?

भोले नाथ को आक,धतूरा, भांग आदि शिव को चढ़ाने की जो परिपाटी है, उसके पीछे यही तथ्य छिपा है कि प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति के अंदर अच्छे-बुरे दोनों पहलू होते हैं, इन नशीले और विषाक्त पदार्थों को शिव को अर्पित करने का अर्थ हुआ उनके दूवारा शिव-शुभ (औषधीय गुण) को स्वीकार करना किन्तु उनकी अशुभ-व्यसन प्रवर्ती का त्याग कर देना। लाइफ मैनेजमेंट के अनुसार, भगवान शिव को भांग धतूरा चढ़ाने का अर्थ है अपनी बुराइयों को भगवान को समर्पित करना। यानी अगर आप किसी प्रकार का नशा करते हैं तो इसे भगवान को अर्पित करे दें और भविष्य में कभी भी नशीले पदार्थों का सेवन न करने का संकल्प लें। ऐसा करने से भगवान की कृपा आप पर बनी रहेगी और जीवन सुखमय होगा।

शिवजी केवल मृगछाल ही क्यों धारण करते हैं ?

निसंदेह समाज में वो ही व्यक्ति वंदनीय होता हैं जो अपरिग्रही हो जिसके जीवन संसार में शांति स्थापित करने के लिए हो । महावीर स्वामी से हजारों साल पहिले भोलेनाथ ने अपरिग्रही बनने का सन्देश देते हुए खुद के शरीर पर मात्र मृगछाल धारण किया क्योंकि केवल मृगछाल धारण करना अपरिग्रह का ही प्रतीक है। अपरिग्रही वो होता है जो आवश्यकता से अधिक मात्रा मे धन वस्तुओं का संग्रह नहीं करता है। परिग्रह एक प्रकार का पाप है, क्योंकि किसी वस्तु का परिग्रह करने का अर्थ हुआ कि दूसरों को उस वस्तु से वंचित करना। निसंदेह शिव सर्व समाज के सर्वमान्य देवता हैं। शिवरात्रि व्रत मनाने का अधिकार ब्राह्मण से लेकर चंडाल तक सभी को है। भोले बाबा के लिए सब एक समान हैं। भगवान शिव महायोगी भी कहलाते हैं, उन्होंने योग साधना के द्वारा अपने जीवन को पवित्र किया है, वे असीमित गुणों के अक्षय भंडार हैं।

देवों के देव महादेव का वाहन नंदी बैल क्यों ?

जहाँ बैल को खामोश एवं उत्तम चरित्र समर्पण भाव वाला बताया गया है, वहीं दूसरी तरफ बैल बल और शक्ति का भी प्रतीक है। बैल जब क्रोधित होता है तो सिंह से भी भिड़ लेता है। सुमेरियन, बेबीलोनिया, असीरि या और सिंधु घाटी की खुदाई में भी बैल की मूर्ति पाई गई संसार की लगभग सभी प्राचीन सभ्यताओं में बैल को महत्व दिया गया है । निसंदेह भारत में भी बैल खेती के लिए हल में जोते जाने वाला एक महत्वपूर्ण पशु रहा है। जिस तरह गायों में कामधेनु को श्रेष्ठ माना जाता है उसी प्रकार बैलों में नंदी श्रेष्ठ है। यही सभी कारण रहे हैं जिसके कारण भगवान शिव ने बैल को अपना वाहन बनाया। पौराणिक कथा अनुसार शिलाद ऋषि ने शिव की तपस्या के बाद नंदी को पुत्र रूप में पाया था। नंदी को उन्होंने वेद आदि समस्त ठान्थों का ज्ञान प्रदान किया। एक दिन शिलाद ऋषि के आश्रम में मित्र और वरुण नाम के दो दिव्य संत पधारे और नंदी ने पिता की आज्ञा से उनकी खुब सेवा की जब वे जाने लगे तो उन्होंने ऋषि को तो लंबी उम्र और खुशहाल जीवन का आशीर्वाद दिया लेकिन नंदी को नहीं। तब शिलाद ऋषि ने उनसे पूछा कि उन्होंने नंदी को आशीर्वाद क्यों नहीं दिया? तब संतों ने कहा कि नंदी अल्पायु है। यह सुनकर शिलाद ऋषि चिंतित हो गए। पिता की चिंता को नंदी ने भांप कर पूछा क्या बात है तो पिता ने कहा कि तुम्हारी अल्पायु के बारे में संत कह गए हैं इसीलिए चिंतित हूं। यह सुनकर नंदी हंसने लगा और कहने लगा कि आपने मुझे भगवान शिव की कृपा से पाया है तो मेरी उम्र की रक्षा भी वहीं करेंगे आप क्यों नाहक चिंता करते हैं। इतना कहते ही नंदी भुवन नदी के किनारे शिव की तपस्या करने के लिए चले गए। कठोर तप के बाद शिवजी प्रकट हुए और कहा वरदान मांगों वत्स। तब नंदी के कहा कि मैं जिंदगी भर आपके ही सानिध्य में रहना चाहता हूं। नंदी के समर्पण से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने नंदी को पहले अपने गले लगाया और उन्हें बैल का चेहरा देकर उसको अपने वाहन, अपना दोस्त, अपने गणों में सर्वोत्तम के रूप में स्वीकार कर लिया। शिवजी के परिवार में जब बिच्छू, बैल और सिंह, मयूर एवं सर्प और चूहा जैसे घोर विरोधी स्वभाव के प्राणी भी प्रेमपूर्वक साथ साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो क्यों नहीं हम हमारे समाज एवं देश में बिना किसी भेदभाव के गिरे हुओं को, पिछड़े हुओं को, विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को साथ लेकर नहीं चल सकते हैं? यह भी सत्य कि कुछ धर्मांध स्वार्थी पथभ्रष्ट तथाकथित धार्मिक इन्सान मौका मिलने पर अपने निज स्वार्थ के खातिर समाज में सांप्रदायिक सद्भाव को नष्ट करने के अंदर शामिल हो जाते है। हम सभी आत्म चिंतन करें जब शिवजी के परिवार में विरोधी स्वभाव के प्राणी भी प्रेमपूर्वक साथ साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो क्यों नहीं हम हमारे समाज एवं देश में बिना किसी भेदभाव के गिरे हुओं को, पिछड़े हुओं को, विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को साथ लेकर चल सकते हैं? यह भी सत्य कि कुछ धर्मांध स्वार्थी पथभ्रष्ट तथाकथित धार्मिक मनुष्य मौका मिलने पर अपने निज स्वार्थ के खातिर समाज में सांप्रदायिक सद्भाव को नष्ट करने के अंदर शामिल हो जाते है। शिव रात्री के पावन पर्व हम सभी सनातन धर्मी भारत वाशी संकल्प ले कि हम समाज के विभिन्न धर्मालंबी लोगों के साथ मिलजुल कर रहेंगे एक दुसरे का सम्मान करके प्रेम पूर्ण समंध बनायेगें । समाज के अंदर ऊँच नीच का भेदभाव मिटाने के लिये काम करेंगे ।

आदि काल के सर्व श्रेस्ष्ट मेनेजमेंट गुरु भोलेनाथ अपने परिवार के अंदर निवास करने वाले विपरीत स्वभाव वाले प्राणी बिच्छू, बैल और सिंह, मयूर एवं सर्प और चूहा जैसे घोर विरोधी स्वभाव के प्राणियों के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो हम विभिन्न धर्मों के अनुयायियों हिदू मुसलमान सिख ईसाई फ़ारसी जैन देश वासियों को साथ लेकर क्यों नहीं जीवन व्यापन कर सकते हैं? सही मायने में भगवान शिव की सच्ची पूजा आराधना तभी होगी जब हम उनकी शिक्षाओं को जीवन के अंदर धारण करके मिल जुल कर प्रेमपूर्वक एक परिवार की भार्ती रहेंगें। ॐ नम: शिवाय, ॐ नम: शिवाय,ॐ नम: शिवाय।

डा. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

किस दिशा में जा रही है भाजपा?

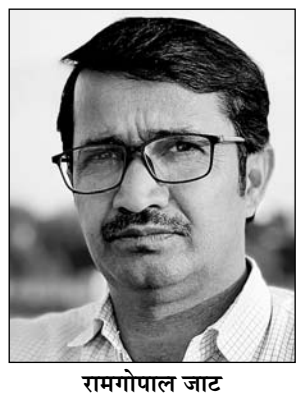

रामगोपाल जाट

राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में पीढ़ी बदलाव के बाद से भाजपा बड़े बदलावों की तरफ बढ़ रही है। गुजरात से राज्यसभा जाने वाले पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा का इस्तीफा और भूपेंद्र यादव को राजस्थान से लोकसभा का टिकट देना कुछ अलग तरह के संकेत दे रहा है। पार्टी में विपक्ष से आने वालों का मेला सा लग गया है। भले ही गृहमंत्री अमित शाह ने कहा हो कि कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को भी अपने साथ जोड़ना है, किंतु हकीकत यह है कि केवल नेता ही पाला बदल रहे हैं। नेता भी वो हैं जो बरसों से भ्रष्टाचार कर रहे थे। कांग्रेस छोड़कर भाजपा ज्वाइन करने वाला कोई नेता ऐसा नहीं है, जिस पर भ्रष्टाचार के आरोप नहीं लगे हों। किंतु भाजपा उनको माला पहनाकर सबसे पहले अंगीकार कर रही है। समझ नहीं आ रहा है कि भाजपा को भाजपा ही रखना है या इसका कांग्रेसीकरण कर देना है। टॉप टू की पोजीशन भाजपा के लिए बरगद के वृक्ष की भांति बन गई है, जिनके आगे सभी नेता बौने साबित हो रहे हैं। बाकी सभी नेताओं के लिए ऊपर से जो संदेश मिलता है, उसकी पालना ही एकमात्र ध्येय नजर आ रहा है।

राजस्थान में 15 की सूची में 7 नये आए हैं, जिनमें अलवर सीट रिक्त थी। बाकी सीटों पर टिकट बदलकर पार्टी ने स्पष्ट संदेश दे दिया कि जो सक्रिय नहीं होगा, जिसको जनता नकार देगी या जो पार्टी लाइन से हटकर बात करेगा, उसको घर बिठा दिया जाएगा। यह बात और है कि चूरू वाला मामला विवादास्पद हो गया है, जहां असल लड़ाई राजेंद्र राठौड़ और राहुल कस्वां के वर्चस्व की दिखाई दे रही है। पहले राठौड़ हारे और अब टिकट की रेस में राहुल हार गए। हालांकि, वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार इस टिकट बदलाव के बाद भी भाजपा को नुकसान होने की संभावना बेहद कम है, किंतु फिर भी पार्टी को दूरगामी परिणाम के हिसाब से निर्णय लेना चाहिए था। दो जनों की लड़ाई में एक को शहीद करने के बजाए दोनों में सुलह भी करवाई जा सकती थी, किंतु भाजपा की सोच कुछ और रही होगी।

अब 10 टिकट बकाया हैं। आरएलपी से गठबंधन की संभावना समाप्त हो चुकी हैं। राजेंद्र राठौड़ के अलावा पार्टी के सबसे कर्मठ नेताओं में एक डॉ. सतीश पूनियां को भी लोकसभा टिकट का इंतजार है, तो जयपुर शहर से अरुण चतुर्वेदी की संभावना सर्वाधिक दिखाई दे रही हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि रामचरण बोहरा की दोनों जीत 100 प्रतिशत मोदी की जीत थीं, लेकिन पार्टी ऐसे नेताओं का बोझ क्यों उठाए, जो 10 साल बाद भी अपना जनाधार नहीं बना पा रहे हों। अगली सूची में अजमेर, जयपुर ग्रामीण और राजसमंद के अलावा झुंझुनू सीट काफी अहम है। इन सीटों के किरदार अगली सरकार में मंत्री पद के सबसे बड़े दावेदार होंगे। राठौड़ अपना आखिरी कार्यकाल तलाश रहे हैं, तो डॉ. सतीश पूनियां को अपनी दूसरी पारी शुरू होने का इंतजार है। इन दोनों के अलावा रामलाल शर्मा पर भी पार्टी का फोकस है। ऐसे में बाकी टिकटों पर सबकी निगाहें टिकी हैं।

राजस्थान में भाजपा ने पीढ़ी बदली तो सही, किंतु गहलोत सरकार की ब्यूरोक्रेसी हावी होने की चर्चे शुभ संकेत नहीं हैं। कम से कम टॉप पॉजिशन पर रहे अधिकारियों को तो दूर ही रखना चाहिए। कुछ अधिकारी काले अंठोज ही हैं। उनको जनता और सरकारों से कोई मतलब नहीं है। उनका रंग सांवला है, बाकी बर्ताव बिलकुल अंग्रेजों जैसा ही है। सरकार को सरकार बदलने का अहसास जनता को कराना होगा। भजनलाल शर्मा के रूप में अच्छा निर्णय लिया गया था, लेकिन अपने कार्यों के द्वारा अगले विधानसभा चुनाव की तैयारी अभी से करनी होगी। गहलोत सरकार के जिन अधिकारियों को प्राइम पोस्ट दी गई हैं, उनको तुरंत हटाना चाहिए, जनता में संदेश विपरीत जा रहा है। यदि एक बार जनता ने मन बना लिया तो अगले चार साल में इस मन को बदलना लगभग नामुमकिन हो जाएगा।

सामान्य परिवार से निकले भजनलाल शर्मा जिस तरह से लोगों से मिलते हैं, उनकी बातें सुनते हैं और समाधान का प्रयास कर रहे हैं, ये भाजपा के लिए शुभ संकेत हैं। मगर जब तक अधिकारियों का रवैया नहीं बदलेगा, तब तक सीएम के अच्छे व्यवहार से कुछ नहीं होने वाला है। जनता यह तो समझ रही है कि सीएम उनके जैसा ही है, किंतु जब तक अधिकारी सीएम की तरह काम नहीं करेंगे, तब तक सरकार का चेहरा दिखाई नहीं देगा। पेपर लीक वाले मामले की तरह ही दूसरे अपराधों पर भी कड़ा रुख अपनाना होगा। प्रत्येक शहर में यातायात जाम की विकराल समस्या से मुक्ति के लिए स्थाई समाधान निकालना होगा। सरकार को आज से ही पांच साल आगे की तैयारी करना होगी, अन्यथा आखिरी छह महीने में गहलोत द्वारा अरबों रुपये लुटाने के बाद भी नैरेटिव नहीं बदल पाने की समस्या भाजपा के सामने भी खड़ी हो जाएगी।

रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार

दीपक साहू 450 किलोमीटर की पैदल यात्रा पर खाटूधाम के लिए निकला

उदयपुर, (कासं)। खाटूधाम मे वार्षिक लक्खी मेले का समय नजदीक आ रहा है,वैसे वैसे श्याम भक्तो मे उत्साह उमंग बढ ता जा रहा है। उदयपुर के भुवाणा निवासी दीपक साहू बुधवार को प्रात:अपनी लम्बाई से बडा बाबा के निशान (ध्वजा) की पूजा अर्चना कर जय श्रीश्याम के उद्घोष के साथ 450 किलोमीटर की पैदल यात्रा पर खाटूधाम के लिए अकेला ही निकल पडा। इससे

- **जुलाई 23 में भी उदयपुर से खाटूधाम पैदल निशान यात्रा कर चुका है दीपक साहू**

पूर्व गत जुलाई 23 में भी उदयपुर से खाटूधाम पैदल निशान यात्रा कर चुका है,जो मात्र 10 दिन मे पूरी कर श्याम दरबार मे पहुंचा। इसी प्रकार सितम्बर माह मे रींगस से खाटूधाम तक 18 किलोमीटर पेट के बल लेटकर कठिनतम यात्रा कर चुका है। इन धार्मिक यात्रा के बारे मे दीपक बताते हैकि एक अदृश्य शक्ति प्रेरणा देती है तो एसा लगता है श्री श्याम बाबा हाथ पकडकर चला रहे हो। इस अवसर पर उदयपुर के अनेक श्याम भक्तो ने जय श्रीश्याम उद्घोष के साथ दीपक को विदा किया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 7 मार्च, 2024

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र दिन 1:03 तक, वारियान योग प्रात: 8:23 तक, कौलव करण दिन 2:27 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मकर, बुध-कुम्भ, गुरू-मेष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज विजया एकादशी व्रत वैष्णवों का है। आज बुध मीन राशि में प्रात: 9:35 पर प्रवेश करेगा, शुक्र कुम्भ राशि में प्रात: 10:43 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:16 तक, चर 11:11 से 12:38 तक, लाभ-अमृत 12:38 से 3:33 तक, शुभ 5:00 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:48, सूर्यास्त 6:27

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सिंह
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। मानसिक तनाव विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक र